RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-12
December -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

पाकिस्तान की परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की स्थिति भारत के संदर्भ में: एक समीक्षा

एस0 सी0 श्रीवास्तव

रक्षा अध्ययन विभाग, जे0 पी0 पी0 जी0 कालेज, वाराणासी.–यू0पी0.–221302

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Dec 2019

Keywords
परमाणु, इस्लामिक बम' पाकिस्तान की तकनीकी , परमाणु शक्ति तथा सुरक्षा

[*]**Corresponding Author**
Email: drsrivastava05[at]gmail.com

ABSTRACT

पाकिस्तानी आणविक कार्यक्रम का संस्थापक अब्दुल कादिर खान को माना जाता है। पाकिस्तान की परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम और उसकी योजनाओं का आकलन किया जाय तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसके परमाणु कार्यक्रम की अधारशिला ही परमाणु बम में रखी गई थी पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम का मुख्य आधार जहॉ परमाणु शक्ति प्राप्त करना रहा वही भारत से प्रतिस्पर्धा करते हुए भारत से शक्तिशाली बनने के सपने भी देखता रहा है। आज के विकासशील देशों में सबसे प्रमुख देश पाकिस्तान है, जो 'इस्लामिक बम' बनाने की पूरी कोशिश कर रहा है तथा उसे बराबर विश्व के लगभग विकसित देशों के परमाणिवक तकनीकी तथा सामग्री की सप्लाई हो रही है। चीन हमेशा पाक का समर्थक रहा है। चीनी नीति ''अपने दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त होता है की उक्ति भारत के बारे में बिल्कुल सत्य साबित होती है। पाकिस्तान की राजनीति में हमेशा कुल कॉटे मौजूद रहे हैं, लेकिन अब वे और उभर उठे हैं और उनके पीड़ादायक बनने में भी समय नहीं लगा। उसके कई सरकारी संस्थानों एवं पाकिस्तान का आलीशान सचिवालय तक के नीलाम होने की नौबत आ गई है। राष्ट्रीय गौरव की नई बुलन्दियों पर दर्शाने वाले परमाणु परीक्षणों के बाद पाकिस्तान में उभारे गये माहौल की घड़ी में बने ये हालात एक प्रकार का शोक भरा पार्श्व संगीत है और यह उनकी सजा है।

1.प्रस्तावना

कुछ देश भक्त अब्दुल कादिर खान को कायदे आजम के बराबर मानते है। कायदे आजम ने पाकिस्तान बनवाया था, आपने अपने काम से हमेशा के लिए इस्लामी राज्य की सुरक्षा यकीनी बना दी। खान बड़े गर्व से कहते है कि हमने यूरेनियम संवर्धन के क्षेत्र में पश्चिमी देशों के एकाधिकारी को हमेशा–हमेशा के लिए तोड़ दिया है। पाकिस्तान की परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम और उसकी योजनाओं का आलकन किया जाय तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसके परमाणु कार्यक्रमकी अधारशिला ही परमाणु बम में रखी गई थी जिसे दुनिया में इस्लामिक बम के नाम से जाना जाता रहा है। वैसे भी पाकिस्तानी शासकों के इरादे असीम उत्ताह तथा विश्व के रंग मंच पर एक सैनिक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान को उभारने के लिए घोषित किये जाने कि रही है।पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम का मुख्य आधार जहॉ परमाणु शक्ति प्राप्त करना रहा वही वह भारत से प्रति स्पर्धा करते हुए भारत से शक्तिशाली बनने के सपने भी देखता रहा है। जब 50 के दशक में स्व0 पंण्डित जवाहर लाल नेहरू ने आणविक शक्ति के द्वारा बिजली की प्राप्ति के बारे में एक योजना पर काम करना चाहा तो देखा–देखी पाकिस्तान को भी इस क्षेत्र मे घुसने का शौक पैदा हुआ। शुरू से ही पाकिस्तान की हर क्षेत्र में भारत से मुकाबला करने जिद्द रही है। काश यह जिद औद्योगिक क्षेत्र में भी होती तब हम पाकिस्तानी द्वारा एटामिक प्लान्टों से बिजली प्राप्ति की बात मान सकते थे। दुनिया जानती है कि 50 के दशक में हमारे यहॉ बडे विशाल पैमाने पर उद्योग आते गये, इसलिए एटमी श्रोत्र द्वारा बिजली प्राप्ति की जरूरत को इन्कार नही किया जा सकता। उधर पाकिस्तान में उद्योग का तो नामो निशान नही था। लेकिन यह जिद्द थी कि वह एटमी रेस मे दौडेगा। सन् 1955 में ही पाकिस्तान का एटमी प्रोग्राम बना, रिर्पोट तैयार हुयी और 37 पाकिस्तानी वैज्ञानिको को अमेरिका में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। उसके बाद सन् 1965 में पहला पाकिस्तानी एटमी रियेक्टर स्थापित किया गया।

2.पाकिस्तान का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम

भारत पाकिस्तान युद्ध सन् 1965 में छिड़ गया, इस युद्ध में पाकिस्तान को मुह की खानी पडी।उसके बाद 1971 में भारत–पाक युद्ध में पाकिस्तान करारी हार और देश–विभाजन में पाकिस्तानियों की गर्दन झुका दी थी। उन्हे केवल अपनी हार की कचोट न थी, बल्कि 90 हजार सैनिको के बन्दी बना लिए जाने का भी शोक था। जाहिर है कि भारत से बदला चुकाने की भावना उसमेंअब भी है। आधुनिक युग में केवल एटमी हथियारों द्वारा ही किसी को पराजित किया जा सकता है।जुल्फिकार अली भुट्टों भारत विरोधी प्रसिद्ध मरहुम ने भारत से युद्ध में हारने के बाद खुले आम घोषणा की कि''पाकिस्तानी लोग घास और पत्ते खायेंगे, यहॉ तक कि भूखे पेट रहेंगें, लेकिन हम एटम बम बनायेगेंइस तरह पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम खुले आम चर्चा का विषय बना रहा। भुट्टो प्रेस सचिव खालिद हसन ने पाकिस्तान द्वारा किए जा रहे परमाणु बम बनाने के प्रयासो को विभिन्न पत्रकारों के सामने भी व्यक्त किया। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''द इस्लामिक बम'' मे इस्टेज

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बीज मैन और हरवर्ट क्रोसेनी लिखते है कि खालिद हमन के खुले रूप में पाकिस्तान बम के प्रचार से हमें विश्वास नही हो रहा था कि पाकिस्तान इस क्षेत्र में सीधे पदार्पण करने जा रहा है ये आगे लिखते है कि हमने मुल्तान पहुँचकर मिस्टर भुट्टो से मुलाकात की। भुट्टो से मिलने पर हमने पूछा कि क्या पाकिस्तान परमाणु बम बना रहा है तो भुट्टो ने साफ–साफ कहा कि जरूर पाकिस्तान परमाणु शस्त्र प्राप्त करना चाहता है। भुट्टो ने आगे कहा कि भारत के साथ युद्ध में पराजय और पाकिस्तान के पतन के पश्चात् अब हमारे सामने एक ही विकल्प बाकी हे कि पाकिस्तान एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त करने के लिए परमाणु बम का सहारा ले।

2.1एटमी प्रोजेक्ट "706" की सामरिक शक्ति:

प्रधानमंत्री भुट्टो के मन में एटम बम बनाने की बात इस कदर बैठ गयी थी कि सन् 1972 में प्रधानमंत्री बनने के दो महिने बाद ही उन्होने मुल्तान में पाकिस्तानी वैज्ञानिकों और सम्बन्धित अफ्सरों की एक मीटिंग बुलाई। यह एक बहुत ही खुपिया मीटिंग थी।यहाॅं एक एटमी प्रोजेक्ट की योजना बनाई गई । इसका नाम प्रोजेक्ट ''706'' रखा गया। सन् 1973 में पाकिस्तान को कनाडा से बनाया एटमी रियेक्टर मिल गया। इस रियेक्टर में प्राकृतिक यूरेनियम ईधन के तौर पर उपयोग में लाया जाता है तब उन्हें यूरेनियम के प्रोसेसिंग प्लान्ट की जरूरत महसूस हुई इसके लिए पाकिस्तान ने फ्रांस से बातचीत शुरू की। प्रोसेसिंग प्लान्ट से उपयोग किये गये ईधन द्वारा एक वर्ष में 300 पौण्ड प्लूटोनियम निकाला जा सकता था। 300 पौण्ड प्लूटोनियम से 30 एटम बम बनाया जा सकता था।सन् 1974 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो ने कहा था कि–सन् 1974 में जब भारत ने पोखरन में पहले एटमी धमाके की परीक्षा की तो भुट्टो भी एटम बम बनाने को कटिबद्ध हो गये। एटमी ईधन के प्रोसेसिंग के लिए सन् 1976 में फ्रांस के साथ एक करार भी हुआ सबकुछ पाकिस्तान के अनुकूल चल रहा था बाद में अमेरिका के दबाव के कारण फ्रांस अपने कारनामें से मुकर गया लेकिन फ्रांस के मुकरने से भी पाकिस्तान की एटमी पेन्टाओ में भी कोई अन्तर नही आया। इस सारी दौड़ धूप के सिलसिले में पाकिस्तान को अपने प्रोजेक्ट के बारे में 95 प्रतिशत मालूमात हासिल हो गयी थी। पाकिस्तानी वैज्ञानिको ने दूसरे श्रोतो से भी रीप्रोसेसिंग की जानकारी लेनी शुरू कर दी थी। उनमें सबसे मुख्य है प्रसिद्ध पाकिस्तानी न्युकिलाई

"Project-706"

वैज्ञानिक डा0 कादिर खाॅं। डा0 कादिर खाॅं ने हालैण्ड के अलमोलो एटामिक प्लान्ट में एटम बम बनाने की फार्मूला सीखा। वह वहाॅं कई वर्षो तक काम करते रहे। यहाॅं तक कि उन्होने हालैण्ड कीनागरिकता भी स्वीकार की, लेकिन यह सब उस समय नाटकीय साबित हुआ जब सन् 1976 में कादिर खान एक दिन चुपके से बम बनाने के महत्वपूर्ण फार्मूले को चुराकर हालैण्ड से पाकिस्तान पहुच गये। सूत्रों का कहना है कि यह सारा ड्रामा भुट्टो के ''प्रोजेक्ट के प्रोजेक्ट 706'' का ही एक हिस्सा था। डा0 कादिर खान पाकिस्तान पहुँचते ही अन्य यूरोपीय देशों से प्लान्ट के इकरार के बाद पाकिस्तान में ढ़ेरो वैज्ञानिक उपकरणो और दूसरे समान मगवाने शुरू कर दिये। प्राप्त जानकारी के अनुसार फ्रांस के सहयोग से कादिर खान ने यूरेनियम प्रोसेसिंग विधि का कार्य समाप्त कर लिया, और साथ ही साथ परमाणु बम बनाने की तकनीकी भी प्राप्त कर ली, अब सवाल धन का था। अब भला पाकिस्तान के पास इतना धन कहा था कि वह एटमी प्लान्टों के लिए धन खर्च करे 9. उसने इसका भी इलाज आसानी से ढूढ़ निकाला। सन् 1971–72 में ही धनवान अरब देश इजराइल के हाथो पिटे थे। याद रहे कि इजराइल के पास भी एटम बम है। भुट्टों मरहूम ने अरब संसार को उकसाया कि इजराइल से मुकाबला करना

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है तो हमारे साथ बैठो, हमारी अक्ल और तुम्हारा पैसा। अरबों के पास धन है तो पाकिस्तान के पास सधु हुए वैज्ञानिक देखते ही देखते पैसो की वर्षा होने लगी। पाकिस्तान की मदद में लीविया सबसे आगे रहा। लीविया के मोहम्मद गद्दाफी ने बम बनाने को करोडो डालर दिये। उन्होने पाकिस्तान को नाइजीरिया से 400 टन यूरेनियम आक्साइड भी दिलवाया, ताकि उससे बम के लिए प्लूटोनियम तैयार किया जा सके। इस प्रकार सन् 1976 में डा0 कादिर खान की निगरानी में इस्लामाबाद के पास कहोटा मे पाकिस्तान का शक्तिशाली एटामिक केन्द्र खुला।लीबिया से पाकिस्तान के सम्बन्ध खराब हो गये। लीबिया से पाकिस्तानी मामलो पर नजर रखने वाले तो यहाँ तक कहते है कि भुट्टो का वहीं ''प्रोजेक्ट 706'' उनकी गर्दन में फॉसी का फन्दा बना। कहते है कि अमेरिका उस प्रोजेक्ट से खुश नही था, इस्लामी दुनिया के तरफदार भी यही कहते है। अमेरिका इजराइल के मुकाबले ''इस्लामी बम'' बनाने देना चाहता है। यद्यपि इस बम के लिए दोनों अमेरिकी लालडे यानी इजराइल और इस्लामी दुनियॉ लड़ पड़े तो आफत मच जायेगी। इसलिए इस्लामी बम के दिमाग भुट्टो को ही रास्ते से हटा दिया गया। बाद में इराक के एटमी रियेक्टर पर इजराइल का हमला दुनिया के सामने है। इस प्रकार जियाउल शासन के पहले पॉच–छः वर्षों तक पाकिस्तानी एटामिक बम का मामला कुछ पीछे पड़ गया।

2.2 <u>पाकिस्तानी सामरिक क्षमता</u>

सन् 1978 में अफगानिस्तान पररूसी हमले के बाद एक बार फिर पाकिस्तानी सामरिक शक्ति को सिर उठाने का मौका मिला। अब की बार अमेरिका ने रूस से बचाव के नाम पर एफ–16 जैसे खतरनाक लड़ाकू विमान पाकिस्तान को दिया, जो कि अन्य खूबियों के साथ–साथ एटम बम भी गिरा सकता है। सवाल यह है कि जब पाकिस्तान के पास बम है ही नहीं तो उसे एफ–16 जैसे विमानों की जरूरत क्यों आन पड़ी ? बात साफ है कि एटमी खिचड़ी फिर पकने लगी है।

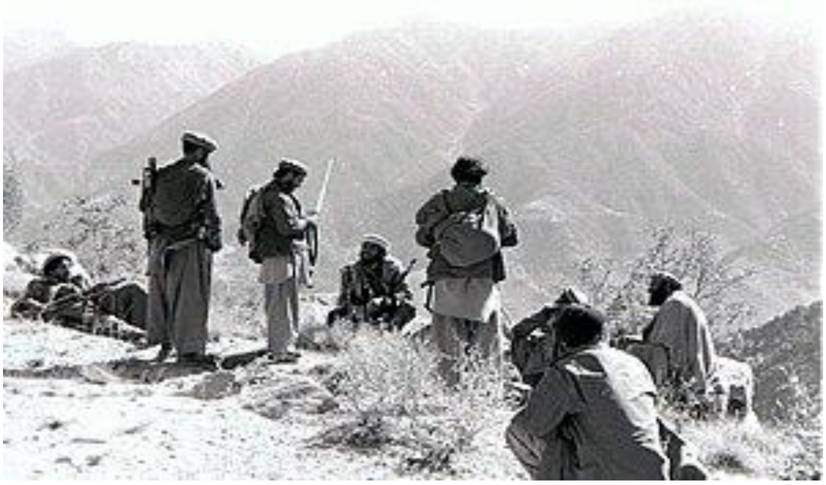

Mujahideen fighters in the Kunar Province of Afghanistan in 1978

जैसे–जैसेजियाउलहक की शासन की डोर मजबूती की ओर बढ़ रही है वैसे–वैसे उन्हें भी एक सुपर सटमी पावन के संरक्षक बनने का शौक होने लगा है। सन् 1976 तक तो भुट्टो 90% काम करा चुके थे, बचा ही क्या था ? यूरेनियम की प्रचुर मात्रा उपकरण, प्रयोगशाला, वैज्ञानिक, फार्मूला, सब कुछ तो था पाकिस्तान के पास। नहीं थे तो उम्रगद्दार भुट्टों साहब, सो उनकी जगह जियाउलहक ने पूरी कर दी। फिर से ''प्रोजेक्ट 706'' वा जमी धूल साफ की गयी। नतीजे की घोषणा की, डा0 अब्दुल कादिर खॉ ने की ।

<u>कहोटा एटमी रिसर्च इंस्टीट्यूटप्लांटऔर परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम</u>: कहोटा एटमी प्लांट की जिस तरह सुरक्षा की जा रही है उससे भी वहॉ बम बनाने की प्रक्रिया का शक होता है। अप्रैल महीने के अमेरिकन साप्ताहिक टाइम्स के अनुसार, हालांकि सदर, जनरल जियाउल हक की हूकुमत इस बात का यकीन दिलाती रही कि वह एटम बम नहीं बना रहा है, लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि पाकिस्तान एटम बनाने की सहूलियत हासिल कर रहा है। रिपोर्ट में दावा किया गया कि पाकिस्तान गिने चुने गैर एटमी मुल्कों में से एक है, जो एटम बम बनाने की सहूलियत हासिल कर चुका है। कहोटा में स्थित पाकिस्तान की एटमी रिसर्च इंस्टीट्यूट के सुरक्षा प्रबन्ध के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि यद्यपि इससे रिसर्च सेन्टर कहा जाता है लेकिन यहॉ एक किले की तरह इसके चारों ओर कई गोलेदार कोटयोर तारों की बाड़े लगायी गयी है, किसी भी सम्भावितखतरे या अचानक खतरे की जानकारी मिलने पर बचाव के लिए इस केन्द्र का ज्यादा भागजमीन के अन्दर है तथा उसकी सुरक्षा के लिए छातादारफौज हैं कहोटा में प्रवेश करने के सभी रास्तों को टैंकों द्वारा बन्द कर दिया गया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इसके अतिरिक्त जमीन से हवा में मार करने वाले मिसाइल और विमान भेदी लोपे लगी हुई हैं, जिनका मुख आकश की ओर है। पाकिस्तानी एयर फोर्स के विमान 24 घंटे उसके ऊपर उड़ान भरते रहते हैं, जिसकी वजह से कहोटा में गैर कानूनी प्रवेश करना असम्भव है।यदि पाकिस्तान के न्यूक्लियर क्षमता पर विचार किया तो यह देखने में आता है कि 1983तक कहोटा सेन्टर में एक हजार इकाईयां काम कर रही थी जिनमें हर साल लगभग 15 किलोग्राम परिशोधित यूरेनियम प्राप्त किया जा सकता है। अब तक दो हजार से तीन हजार इकाईयां काम कर रही हैं, यह 45 किग्रा0 परिशोधित यूरेनियम हथियार बनाने के लिए बना सकती है। एटम बम बनाने के लिए 16 किग्रा0 परिशोधित यूरेनियम का उपयोग होता है। क्रेन्स्टन के अनुसार पाकिस्तान प्लूटोनियम द्वारा भी बम बनाने की चेष्टा में लगा हुआ है। क्रेन्सटन के रिपोर्ट के अनुसार रीगन शासन ने सन् 1981 में तीन अरब बीस करोड़ डालर की सैनिक सहायता पाकिस्तान को देना इसलिए मंजूर किया था कि पाकिस्तान एटम बम बनाने के इरादे को छोड़ दे। इसी के साथ 13 जून 1986 को लन्दन के फाइनेंसियल टाइम्स की रिपोर्ट भी चौका देने वाली रही। लन्दन के इस पत्र का कहना है कि पाकिस्तान प्लूटोनियम बनाने की क्षमता रखता है, जिससे एटम बम बनाना आसान हो सकता है। इस रिपोर्ट ने सीनेट क्रेन्सटन की रिपोर्ट की पुष्टि कर दी। तेहरान स्थित अमेरिकी दुतावास ने छापे के दौरान ऐसे दस्तावेज हाथ लगे, जिनमें यह स्पष्ट लिखा था कि हाल में अमेरिका से लिए आधुनिकतम् लड़ाकू विमान एफ–16 का उपयोग पाकिस्तान, अफगानिस्तान के खिलाफ नहीं, बल्कि भारत के खिलाफ करने वाला था। इस सूचना में एक दूसरी सूचना जोड़ ले तो पाकिस्तानी नियम बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। लन्दन के सम्मानित दैनिक फाइनेंसियल टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तानी वैज्ञानिक उस प्रकार का एटम बम तैयार कर रहे हैं जो एफ–16 में सरलता से फिट हो सके। और दूर तक ले जाया जा सके।

3.पाकिस्तानी परमाणु आणविक संयत्रः

आज पाकिस्तान के पास मुख्यतः निम्नलिखित परमाणु संयंत्र हैं –

1) 25 मेगावाट का करांची स्थित आणविक संयंत्र जो कि अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेन्सी की निगरानी में है।
2) रिप्रोसेसिंग पावर प्लाण्ट इंस्टीट्यूट आफ साइंस (न्यूक्लियर) एण्ड टेक्नॉलाजी,नेल्लौर–2 (इस्लामाबाद)
3) न्यूक्लियर पावर प्लाण्ट कहोटा।
4) हैवी वाटर प्लाण्ट, मुल्तान।
5) फ्यूल फैब्रीकेशन प्लाण्ट, करांची।
6) हेग्जा फ्लोराइट प्लाण्ट मुल्तान।
7) न्यूक्लियर पावर प्लाण्ट चश्मा।

पाकिस्तान को अपने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को चलाने के लिए निम्नलिखित देशों की सहायता मिल रही हैः–

1. चीन :परमाणु बम बनाने की डिजाइन एवं भारी यूरिनियम, वैज्ञानिक सहायता, प्लूटोनियमरिप्रोसेसिंग तकनीकी।
2. नीदरलैण्ड, फ्रांस, ब्रिटेन, स्विटरलैण्ड, वेस्ट जर्मनी, ईटली, अमेरिका, कनाडा : साज सामान व तकनीकी सहायता।
3. सऊदी अरब, लीबिया और मिश्र।: वित्तीय और राजनैतिक सहायता।
4. नाइजीरिया, फ्रांस, मलेशिया : यूरेनियम सहातया।

5. टर्की एवं यू0एस0ए0 : मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक एवं आर्थिक सहायता।

4. इस्लामिक बमका इतिहासऔर पाकिस्तान की नीति :

पाकिस्तान में परमाणु बम बनाने की कल्पना सर्वप्रथम वहॉ के भूतपूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो को आयी। वे अणुबम को इस्लामिक एवं अन्य अरब देशों से प्रर्याप्त धनराशि से प्राप्त की। उनका कथन था कि अणु बम संसार की प्रमुख सभ्यताओं के पास है जैसे–ईसाइयों, साम्यवादियों और सम्भवतः हिन्दुओं के पास भी है। केवल इस्लाम के पास नहीं है, हम उसे लेकर रहेंगे। और उन्होनें कहा कि जब भारत परमाणु बम बनाता है तो हम भी परमाणु बम बनायेंगे, हम इसे लेकर रहेंगचाहे हमे घास की रोटियॉ ही क्यों न खानी पड़े, हम भारत के इस कारनामें में पाकिस्तान को ब्लैकमेल नहीं होने देंगे।इस बात का यह सबूत है कि अणु युक्त पाकिस्तान की नींव बहुत पहले ही पड़ चुकी थी, यह उस समय की बात है जब भुट्टों 1965 में आयाूब खॉ के शासन काल में कैबिनेट मंत्री थी। यहीं से शुरू होता है परमाणु बम का इतिहास।यद्यपि पाकिस्तान ने 1953 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना कर चुका था। उसका उद्देश्य था कि पाकिस्तान में साइरोसीन रेडियों और रियेक्टर प्रौद्योगिकी के जानकार वैज्ञानिक तैयार किये जाये। पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद के नजदीक नेल्लौर नामक स्थान पर पाकिस्तान नेवैज्ञानिक एवं औद्योगिक संस्थान की स्थापना 1965 में अमेरिकी सहायता से की। जब भुट्टों सन् 1972 में प्रधानमंत्री बने तो उन्होनें मुल्तान में पाक के सर्वोच्च वैज्ञानिको की एक बैठक की और उनसे कहा कि हमारे देश को परमाणु बम बनाना है, इसके निर्माण में कितना समय लगेगा। उन्होंने यह भी कहा कि में हर तरह की मदद करने के लिए तैयार हूॅं। इस बैठक में पाक वैज्ञानिकों का कहना था कि बम बनाने में कम से कम 5 वर्ष का समय लगेगा लेकिन भुट्टों नेकहा कि ‘‘इसे केवल 3 वर्षों में बनाया जाय।’’ इस उद्देश्य को लेकर भुट्टों ने अरब देशों का 1972–73 में व्यापक दौरा किया और वहॉ की मुस्लिम शासनाध्यक्षों से मिले। लिबिया पहले से ही इस तरह के कार्यक्रमों की प्रतीक्षा में था लेकिन इजराइल के डर से वह चॅू तक नहीं कर पा रहा था, वहॉ के राष्ट्रपति भुट्टों की इस योजना को मान लिये। लिबिया की मदद से पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम शुरू हुआ। 1981 में स्टीव बिसमान और हर्वेट क्रोसनी ने ‘‘इस्लामिक बम’’ पर एक पुस्तक लिखी जिसमें लिबिया की भारी आर्थिक मदद का वर्णन किया गया था। दोनों लेखकों ने लिखा है कि किस तरह अमेरिकी डालर जो विशेष हवाई जहाजों द्वारा लिबिया की राजधानी त्रिपोलनी से करॉची पहुॅचायी गयी। पहली बार दिसम्बर 1975 में और दूसरी बार 1976 में लीबियाई रकम पाकिस्तान पहुॅचायी गयी। तकनीकी क्षेत्र में सबसे पहले पाकिस्तान की मदद के लिए फ्रांस ने हाथ बढ़ाया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की पहल–पहल 1975 में ‘‘चाश्मा’’ नामक स्थान पर रिप्रोसेसिंग प्लंटोनियम प्लांट लगाया गया। पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में फ्रांस के सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता। फ्रांस इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेन्सी से एक संधि की इसके तहत पाकिस्तान ने प्रतीज्ञा की थी कि वह रिप्रोसेसिंग प्लांट से प्राप्त किये गये प्लूटोनियम का इस्तेमाल परमाणु बम बनाने तथा परमाणु विस्फोट करने के लिए नहीं करेगा। तथा इसके साथ ही साथ यह निश्चय किया गया था कि पाकिस्तान अपने ‘‘चाश्मा’’ प्लॉट को अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण के लिए सदैव खुला रखेगा। परन्तु जब भुट्टों को फॉसी के तख्ते पर लटका दिया गया और वहॉ का राष्ट्रपति जियाउलहक बने तो इनका परमाणु कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण के लिए तैयार नहीं हुआ। इससे बाध्य होकर फ्रांस ने रिप्रोसेसिंग कान्ट्रेक्ट को 15 जुलाई 1979 को समाप्त कर दिया।

नाभिकीय आयुद्ध संसार की इस विशाल जनसंख्या को समाप्त करनेका आधुनिक साधन हो गया है। परमाणु आयुद्धों का भण्डार यहॉ तक पहुॅच गयाहै कि सम्पूर्ण मानव जाति का नाश होना प्रायः सुनिश्चित है। आज मानव जाति पर परमाणु बम से न्यूट्रान बम वाया हाइड्रोजन बम तक पहुॅच गया है। आज यह खुले रूप में स्वीकार किया जाता है कि यदि इन आयुद्धों का प्रयोग हुआ तो पृथ्वी पर मानव जाति, उसकी संस्कृति सभ्यता का विनाश हुए बिना नहीं रहेगा और यदि कुछ प्राणी किसी प्रकार इस दानव से बचे रहे तो उनकी स्थिति इस पृथ्वी पर जानवरों से भी बदतर हो जायेगी। आज का मानव अपने हाथ में विशाल शक्ति लिये हुए है, वह चाहे तो उससे अपना विनाश कर लें अथवा इसका प्रयोग शान्तिपूर्ण उपयोग हेतु मानव कल्याण के कार्यो में कर लें। द्वितीय विश्व युद्ध की आग में पॉच करोड़ से अधिक लोग स्वाहा हुए। इस युद्ध अन्तिम चरण में इस महादानवीं (परमाणु) का परीक्षण अस्त्र के रूप में किया गया जो प्रातः काल पॉच बजकर तीस मिनट,16 जुलाई 1945 को न्यूमैजिक्सको की मरूभूमि पर पहले अणु शस्त्र के रूप में हुआ। इसके बाद इस विश्व युद्ध में जापान के दो नगरों हीरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम छोड़ने का निर्णय ही नहीं लिया वरन् 6 अगस्त और 9 अगस्त 1945 को बम का विस्फोट करके जापान को पूरी तरह बर्बाद कर दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हो गया परन्तु हजारों मानव समूहों को मृत्यु की भेंट चढ़ाने वाला ज्ञान का यह महादैत्य शिशु जीवित रहा, मानव द्वारा पोषित हुआ और प्रौढ़ हुआ। आज सम्पूर्ण विश्व भयानक युद्ध के आतंक के दौर से गुजर रहा है और आने वाला यह भयानक युद्ध कितना विनाशकारी होगा इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। क्योंकि 53 वर्षों में हीरोशिमा और नागासाकी वाला अणु बम तो बहुत पुराना पड़ चुका है उसकी जगह ले चुके हैं जीवाणु बम, रासायनिक बम और न्यूट्रान बम। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अब तक लगभग 13,000 से अधिक परमाणु विस्फोट हो चुके हैं और केवल अमेरिका तथा रूस के पास करीब

10,000 परमाणु बम हैं। अतः आज मानव जाति बारूद के ढेर पर बैठी है।

4.1 इस्लामिक बम बनाने हेतु पाकिस्तान का प्रयासएवंचीन व अमेरिका की मदद :

वैज्ञानिक आंकलन के अनुसार इस समय पूरे विश्व में 1,350 मेगा टन के, 500000 से अधिक परमाणु अस्त्र उपस्थित है। यदि इन सबका एक साथ प्रयोग किया गया तो 40 से 50 विश्व संस्कृतियॉं एक साथ समाप्त हो सकती हैं। इस महादैत्य को प्राप्त करने के लिए विश्व के विकासशील देशों में बहुत से राष्ट्र इच्छुक हैं। आज के विकासशील देशों में सबसे प्रमुख देश पाकिस्तान है, जो 'इस्लामिक बम' बनाने की पूरी कोशिश कर रहा है तथा उसे बराबर विश्व के लगभग विकसित देशों के परमाणिवक तकनीकी तथा सामग्री की सप्लाई हो रही है। एक तरफ अमेरिका उसे तकनीकी सहायता क्राइट्रान तथा दूसरी तरह चीन उसे पूरे नियम संशोधित करने की जानकारी दे रहा है। पाकिस्तान के अनुसार इस परमाणु बम बनाने के लिए सारे अरब देशों से सहायता मिल रही है और पाकिस्तान उनकी सुरक्षा हामी लिये हुए है जिससे पाकिस्तान के इस परमाणु बम का नाम 'इस्लामिक बम' रखा गया है। पाकिस्तान यह सहायता जिस योजना के रूप में ले रहा है उसे ''योजना 706'' का नाम दिया गया है। पाकिस्तान द्वारा परमाणु अस्त्रों को दागने हेतु क्राइट्रान स्वीच अमेरिका से प्राप्त हो चुकी है। इस क्राइट्रान टाइगर के 12 जुलाई 1975 को सफल परीक्षण से उसके पड़ोसी राष्ट्रों की सुरक्षा को गम्भीर खतरा पैदा हो गया है, इसमें भारत प्रमुख है। यह प्रश्न उठाये जा रहे हैं कि

- क्या हीरोशिमा व नागासाकी के विध्वंश की विभीषिका भय त्रादसी भारत में ही दोहराई जायेगी ? क्या जापान की तरह भारत में भी कई पीढ़ियॉं इस आणविक अस्त्रों से अंगहीन विकृत होने का बाध्यता झेलेगी ?
- क्या हमारी भी शल्यश्यामला धरती भी रेगिस्तान तथा श्मशान की बवण्डर सहने को बाध्य हो जायेगी ?
- क्या पाकिस्तान ने इस बम को पूर्ण रूप से बना लिया है या उसके लक्ष्य को प्राप्त करने के अन्तिम बिन्दु पर पहुँच चुका है ?

यदि इस इस्लामिक बम के जनक माने जाने वाले डा0 अब्दुल कादिर खॉं की ''हुरमत'' एवं ''डान'' जो कराची से प्रकाशित होते हैं, में छपी भेट वार्ता पर विश्वास किया जाय तो डा0 खॉं के अनुसार पकिस्तान को यूरेनियम सम्बर्धन की प्रणाली में विशिष्टता मिल चुकी है। ''मुस्लिम'' नामक दैनिक समाचार पत्र के अनुसार ''कहोटा'' स्थित परमाणु भट्टी में यूरेनियम 235 को 5 प्रतिशत तक शोधन करने की क्षमता पाई जा चुकी है। वहीं दूसरी ओर पाकिस्तानी समाचार पत्र नदाए–वक्त और मुस्लिम आदि के अनुसार परमाणु बम बनाने के लिए पाकिस्तान आवश्यक 95 प्रतिशत शुद्ध यूरेनियम की स्थिति तक अभी नहीं पहुँच पाया है। जिसकी परमाणु बम बनाने में आवश्यकता पड़ती है तो यह परमाणु बम कैसा ? लेकिन परमाणु वैज्ञानिकों का कहना है कि यूरेनियम प्राकृतिक दशा में 0.7 प्रतिशत तक ही शुद्ध पाया जाता है और सर्वाधिक कठिनाई को 3 से 5 प्रतिशत तक शुद्ध करने में होता है। आगे की समस्या तो मात्र तकनीकी स्तर की है। यदि पाकिस्तानी परमाणु बम का कार्यक्रम केवल शान्तिपूर्ण कार्यो हेतु है एवं उद्देश्य मात्र विद्युत उत्पादन से जुड़ास है तो 5%तक परिशुद्ध यूरेनियम की क्या जरूरत पड़ रही है ? वह तो केवल 3% शुद्ध यूरेनियम से ही हो सकता है। परमाणु बम की तैयारियॉं वर्षों से चर्चा का विषय बना हुआ है और यह विषय आज तक भी गम्भीर रूप से पड़ोसी राष्ट्रों के सुरक्षा को गम्भीर खतरा पैदा कर रहा है। प्राप्त खबरों के अनुसार अचानक कुछ ऐसी घटनायें घटी हैं जिससे भारत की सुरक्षा को बहुत ही खतरा पैदा हो गया है। वे घटनाएं निम्न हैं :–

- पाकिस्तान ने कुछ समय पूर्व विशिष्ट धातु के ट्यूब्स हालैण्ड से छद्म फर्मो के नाम पर मॅगवाए। इन ट्यूब्स का उपयोग परमाणु शस्त्रों के निर्माण में ही किया जाता है।
- दूसरी बात यह है कि पाकिस्तान हाल ही में क्राइट्रान स्वीच अमेरिका की मदद से बनाने में सफलता प्राप्त कर चुका है। यह स्वीच परमाणु बमों को दागते समय घोड़े के सदृश्य काम करते हैं। इनके सक्रिय होते ही परमाणु बम की विस्फोटक श्रृंखला की क्रिया शुरू हो जाती है और परमाणु बम विस्फोटित हो जाते हैं, लंदन टाइम्स के अनुसार क्राइट्रान तस्करी के प्रसंग में पाक नागरिकों को अमेरिका में पकड़ा गया। पाक बम के जनक डा0 अब्दुल कादिर खॉं को आणविक तकनीकी चुराने के अपराध में डच सरकार उनकी अनुपस्थित में ही अलमेलों यूरेनियम सम्बन्धित करने वाले प्लांट के विवाद में 4 वर्ष की सजा चुना चुकी है।
- भारत की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर पाक गतिविधियॉं तीव्र हो रही है, जैसे कि 1971 के युद्ध के समय थी। नुब्राघाटी एवं सियाचीन ग्लेशियर में सैनिक झड़पे इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। पाक बम का स्वागत केवल वक्तव्यों के शांतिपूर्ण उद्देश्यों से सम्भव नहीं है। पाकिस्तान अब सम्भवतः अपना इस्लामी चरित्र खो बैठा है और सही माना जाय तो पाकिस्तान परमाणु बम बना चुका है।

<u>चीन की मदद :–</u> चीन हमेशा पाक का समर्थक रहा है। चीनी नीति ''अपने दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त होता है

RRIJM 2015, All Rights Reserved

की उक्ति भारत के बारे में बिल्कुल सत्य साबित होती है। जब से पूर्व सोवियत संघ ने अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप किया और वियतनाम की सोवियत समर्थक करीब 1 लाख सेनाओं ने कम्पूचिया की सरकार का तख्ता पलट दिया, तब से चीन–पाक के करीब तेजी से साथ आता गया। इसका लाभ पाक के शासक उठाने लगे, भुट्टों के समय से ही चीन पाकिस्तान का महत्वपूर्ण समर्थ रहा है। तथा पाक अपने परमाणु बम का परीक्षण पूरी तरह चीन के मदद से ही सम्भवतः करेगा। जिसका उल्लेख पूर्व भारतीय थल सेनाध्यक्ष जनरल ए0एल0 बैव ने करते हुए कहा था कि पाकिस्तान अपने परमाणु बम का प्रयोग चीन मे करने जा रहा है।

अमेरिका की मदद :– अमेरिका पाक के परमाणु भौतिकी कार्यक्रम को शुरू से ही संदेह की नजर से देखता रहा है। अक्टूबर 1979 में पहली बार अमेरिका ने पाकिस्तान को आर्थिक मदद देनी शुरू की। 16 अप्रैल 1979 को अमेरिका प्रशासन ने घोषणा की कि वह पाक को परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिये (विकास) जो आर्थिक मदद दे रहा है उसमें 49 मिलियन डॉलर की कटौती वह आगामी वर्षो से करेगा। पाकिस्तान को अमेरिका से आज तक बहुत सी आर्थिक तथा सैनिक सहायता प्राप्त हुयी है। ऐसा ही लगता है कि अणु बम वस्तुतः युद्ध अस्त्र न होकर राजनीति का अस्त्र हो गया है और इसका प्रयोग युद्ध में न किया जाय वरन् भयादोहन के लिए किया जाय। यदि दोनों पड़ोसी राष्ट्र पाक और भारत परमाणु अस्त्र बना ले तो उनमें शायद शस्त्रों की होडमे कमी आ सकती है। क्योंकि पाक का सकल राष्ट्रीय उत्पादन भारत के सकल राष्ट्रीय उत्पादन भारत के सकल राष्ट्रीय उत्पादन का मात्र 1/8 भाग है। और यदि पाक दूसरों के कन्धों पर चढ़कर दौड़ में भाग लेना चाहे तो वह बहुत दूर तक हमारे साथ नहीं दौड़ सकता।सम्भव है कि पाक ने परमाणु बम बनाकर न रखा हो लेकिन विश्व विख्यात अमेरिकी पत्रकार जैक एण्ड रसन के अनुसार पाक इस समय इस स्थिति में है कि वह अपने बम का परीक्षण कर लिये बिना ही उन्हें इकट्ठा करता जा सकता है। इन बमों का वास्तविक विस्फोट जरूरी नहीं है, जैसा कि इजराइल तथा दक्षिणी अफ्रीका ने विस्फोट नहीं किया है। सारी दूनियॉ जानती है कि भारत एक शांतिप्रिय देश है और हमारी परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए है। हमने 1964 में चीन द्वारा इस महादानवी शस्त्र को प्राप्त कर लेने के बाद भी इससे दूर रहे । लेकिन अब हमारे पड़ोस में पाकिस्तान भी परमाणु अस्त्रों से सुसज्जित हो रहा है। ऐसी परिस्थिति में भारतीय प्रधानमंत्री स्व0 श्री राजीव गॉधी का यह वक्तव्य स्वागत योग्य है कि यदि अमेरिका जैसे आका अपने पिट्ठू को परमाणु औद्योगिक से सामरिक उपयोग सम्बन्धी कार्यक्रम से पीछे नहीं हटाते तो, भारत के सामने पुरानी नीति पर विचार करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचेगा।

4.2 पाकिस्तान परमाणु परीक्षण ऊर्जा कार्यक्रम एवं महत्वपूर्ण तिथियॉ :

पाकिस्तान ने आन्तरिक दबावों को नकारते हुए 28 मई 1998 को दोपहर बाद पॉच परमाणु परीक्षण किये जो कि अत्यधिक शक्तिशाली थे। ये भूमिगत परीक्षण ईरान और अफगानिस्तान की सीमा से लगे पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रांत के चगाई क्षेत्र में स्थानीय समय के अनुसार दोपहर साढ़े तीन बजे किये गये। इस बीच भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने पाकिस्तान के परमाणु परीक्षण को भारत द्वारा अपनाई गयी नीति को पुष्ट करने वाला बताया है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री नवाज शरीफ ने परमाणु परीक्षण के बारे में शाम छः बजे अपने राष्ट्र को सम्बोधित किया। परीक्षण के बाद कहा कि डा0 अब्दुल कादिर खान के नेतृत्व में खान अनुसंधान प्रयोगशाला ने परमाणु विस्फोट के काम आने वाले यूरेनियम 235 के परिशोधन से जुड़ी तमाम समस्याओं का सफलतापूर्वक निराकरण कर लिया है।बयान में कहा गया, ''सभी काम 1984 में ही पूर्ण कर लिये गये थे और शस्त्र प्रणाली विकसित करने केलियकई सफल पूर्वक परीक्षण किये गये। बयान में कहा गया, दुश्मन की किसी भी हरकत का करारा जबाव देने के लिए लम्बी दूरी तक मार करने वाले गौरी मिसाइल पर परमाणु अस्त्र लगाये जा रहे हैं। ब्लूचिस्तान का चगाई क्षेत्र ईरान और अफगानिस्तान से महज 50 और 30 किलोमीटर दूर है। भारत में परमाणु विस्फोटों के बाद पाकिस्तान में सरकार पर परमाणु विस्फोट करने के लिए दबाव बढ़ गया था। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री क्रमशः श्री नवाज शरीफ और श्री गौहर अयूब खान दोनों ने ही भारत के परमाणु विस्फोटों पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया की परम करार दिया था। श्री अयूब ने कई बार कहा था कि पाकिस्तान परमाणु परीक्षण करने की स्थिति में है। उल्लेखनीय है कि 11 मई को भारत में तान परीक्षणों के बाद 13 मई को फिर से दो परीक्षणों के होने पर पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने भारतीय नेताओं की बड़ी आलोचना की थी। श्री अयूब ने 13 मई को बयान दिया था कि भारत अब खुद स्वीकार कर रहा है कि वह अपने तमाम परमाणु हथियारों का परीक्षण कर रहा है। जिनमें युद्धक और राजनीतिक परमाणु अस्त्र शामिल है। ये हथियार अभी तक पाकिस्तान की खासियत रहे हैं। इन परीक्षणों से पाकिस्तान पर अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये गये हैं। जो करोड़ों की आबादी वाले इस निर्धन देश की बर्दास्त के बाहर है। पाकिस्तान के इस जवाबी कदम से दक्षिण एशिया में परमाणु होड़ शुरू होने की आशंका बढ़ गई है। विश्व इतिहास के पन्नों पर अंकित महत्वपूर्ण तिथियों में पाकिस्तान का परमाणु सफरनामा निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1972: इस तिथि को पाकिस्तान ने अपना खुफिया परमाणु हथियार कार्यक्रम शुरू करने का निर्णय लिया। कनाडा ने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कराची के परमाणु बिजली संयंत्र के लिए रियेक्टर गुरूजल और गुरूजल उत्पादन सुविधा उपलब्ध करायी।

1974: पश्चिमी आपूर्तिकर्ताओं ने भारत के पहले परमाणु परीक्षण की रोशनी में पाकिस्तान को परमाणु प्रौद्योगिकी देने पर पाबंदी लगाई।

1975: जर्मनी में प्रशिक्षित धातु विज्ञानी डा0 अब्दुल कादिर खान की वापसी के बाद पाक ने कहोटा यूरेनियम परिशोधन संयंत्र के लये कलपुर्जे और प्रौद्योगिकी की खरीदारी शुरू की।

1976: कनाडा ने कराची के संयन्त्र के लिए ईधन की आपूर्ति बन्द की।

1977 : जर्मन विक्रेताओं ने यूरेनियम परिशोधन के लिये पाकिस्तान को निर्वात पम्प और उपकरण उपलब्ध कराये। ब्रिटेन ने पाकिस्तान को उच्च आवृत्ति के इन्वर्टर बेचे। अमेरिका ने पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम को देखते हुए उसे सैनिक और आर्थिक सहायता देने पर रोक लगाई।

1978 : फ्रांस ने चाश्मा में प्लूटोनियम संयंत्र का सौदा रद्द किया।

1979 : कहोटा संयंत्र के लिये यूरेनियम और उपकरण का आयात पकड़े जाने पर अमेरिका ने पाकिस्तान के खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये।

1981 : अमेरिका हवाई अड्डे पर दो तस्कर पकड़े गये जो प्रोटान जिरकोनियम पाकिस्तान ले जा रहे थे। इसके बावजूद तत्कालीन रीगन प्रशासन नें अफगानिस्तान में सोवियत विरोधी मुहिम को देखते हुए पाकिस्तान के खिलाफ लगे आर्थिक प्रतिबन्ध हटाकर खुले दिल से सैनिक और वित्तीय सहायता देनी शुरू कर दी।

1983 : चीन ने कथित रूप से पाकिस्तान को बम का डिजाइन उपलब्ध कराया। अमेरिकी गुप्तचर एजेन्सियों को यकीन हुआ कि पाकिस्तान का परमाणु कार्यक्रम हथियार बनाने के इरादे से चल रहा है।

1985 : कांग्रेस ने प्रेसलर कानून बनाया जिसमें यह प्रावधान रखा गया कि अगर व्हाइट हाउस यह प्रमाणित नहीं करता कि पाकिस्तान परमाणु बम नहीं बना रहा है तो पाकिस्तान के खिलाफ आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिये जाय। पाकिस्तान को 1990 तक इस आशय का परमाणु पत्र मिलता रहा।

1986 : पाकिस्तान और चीन ने परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण इस्तेमाल के समझौते पर हस्ताक्षर किये।

1987 : पाकिस्तान ने पश्चिम जर्मनी से ट्रिटियम परिशोधन और उत्पादन सुविधा हासिल की।

1989 : चीन की मदद से पाकिस्तान ने 27 किलोवाट का अनुसंधान रियेक्टर लगाया जो अन्तर्राष्ट्रीय निगरानी में आ गया।

1990 : पाकिस्तान के खिलाफ प्रेसलर कानून के तहत आर्थिक और सैन्य प्रतिबन्ध लगाये गये।

1991 : पाकिस्तान ने शस्त्र बनाने में सूक्ष्म यूरेनियम के जखीरे की हद तय की। आज तक पाकिस्तान जिस परमाणु क्षमता का दम भरता रहा है, वह चोरी से प्राप्त हुई है और इसमें चीन और अमेरिका के साथ यूरोपीय श्वेत वर्णीय देशों ने भरपूर मदद की है। जो कि निम्नलिखित है :–

देश	सामग्री
1– जर्मनी	यूरेनियम हेक्सा क्लोराइड प्लान्ट, एल्यूमिनियम राड और वैकुम पम्प।
2– फ्रांस	डिजालवर, इवपरेटर, मिक्सर, सेटलर्स स्पेशल वेसल और स्पेक्ट्रोमीटर।
3– इटली	स्पेशल स्टील वेसल।
4– नीदरलैण्ड	6, 200 स्पेशल स्टील ट्यूब।
5– नार्वे	10 टन यूरेनियम पीला केक।
6– स्विटजरलैण्ड	इवपरेटर, कन्डेन्सर, इलेक्ट्रिकल इन्वर्टर तथा गुणवत्ता नियंत्रित करने वाले यंत्र।
7– टर्की	अमेरिका को दोबारा बेचा गया इलेक्ट्रिक इन्वर्टर।
8– ब्रिटेन	मेटल फिनिशिंग प्लान्ट।

पाकिस्तान को अभी तक उसके परमाणु कार्यक्रम में जो देश मदद दे रहे थे, उसमें कई महाशक्तियॉ भी हैं और सब के बलबूते पर पाकिस्तान अपने को परमाणु सम्पन्न देश समझ रहा था। और भारत से बराबरी करने यानि भारत के पोखरन में हुए पॉच परमाणु विस्फोटों को, देखकर उसने भी परमाणु परीक्षण करने का निश्चय किया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

5.निष्कर्ष :

भारत के साथ बराबरी के जुनून में पाकिस्तान द्वारा किये गये परमाणु परीक्षणों के बाद वह गंभीर वित्तीय संकट से ग्रस्त है। नवाज शरीफ सरकार के फैसले और भी उसके गले का फंदा बन रहे हैं। राजनीतिक व्यवस्था की स्थिति भी जटिल हुई, तथा मुल्क के विभिन्न सूबों के निवासियों के बीच बढ़ते तनाव से भी सरकार के समक्ष अपने ही चक्रव्यूह में फॅसने की हालत पैदा हो गई है।पाकिस्तान की स्थिति के बारे में यह मत वहॉ की राजनीति के विश्लेषणों ने व्यक्त किया है। अेरिका के विदेश उपमंत्री स्ट्राव टालवोट की 30 जुलाई से शुरू पाकिस्तान यात्रा के सिलसिले में प्रकाशित एक विश्लेषण में कहा गया है कि पाकिस्तान की राजनीति में हमेशा कुल कॉटे मौजूद रहे हैं, लेकिन अब वे और उभर उठे हैं और उनके पीड़ादायक बनने में भी समय नहीं लगा। राष्ट्रीय गौरव की नई बुलन्दियों पर दर्शाने वाले परमाणु परीक्षणों के बाद पाकिस्तान में उभारे गये माहौल की घड़ी में बने ये हालात एक प्रकार का शोक भरा पार्श्व संगीत है।एक विशलेषक ने पाकिस्तान का दिवाला निकलने की आशंका व्यक्त की है। उसके अनुसार –''एक माह पूर्व पाकिस्तान की विदेशी मुद्रा एक अरब डालर थी, जो अब सिर्फ अस्सी करोड़ डालर रह गयी है। जबकि इतना ही राशि उसे विदेशी ऋणों पर ब्याज के तौर पर चुकानी है। टिप्पणी में यह भी कहा गया है कि ब्याज चुकाने के बाद पाकिस्तान के पास आयात के लिए एक पाई भी नहीं रह जायेगी।इस स्थिति से बचने के लिए सरकार अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से अपील कर रहा है तथा उसके कई सरकारी संस्थानों एवं पाकिस्तान का आलीशान सचिवालय तक के नीलाम होने की नौबत आ गई है।परमाणु शक्ति अर्जित करके पाकिस्तान अपने परम्परागत व प्रथम श्रेणी के शत्रु भारत पर सामरिक श्रेष्ठता स्थापित करना चाहता था, जिससे भावी भारत–पाक युद्धों में परमाणु आक्रमण का भय दिखाकर कश्मीर सहित विभिन्न द्विपक्षीय मामलों का अपने अनुकूल हल ढूंढ़ा जा सके। इतना ही नहीं,दक्षिण एशिया की प्रभावी शक्ति एवं विकासशील देशों की बिरादरी में भारत की स्थापित प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाकर क्षेत्रीय शक्ति का दर्जा प्राप्त करना भी पाकिस्तान के लक्ष्यों में से एक प्रमुख था।शुरू से ही पाकिस्तान की हर क्षेत्र में भारत से मुकाबला करने जिद्द रही है। काश यह जिद औद्योगिक क्षेत्र में भी होती तब हम पाकिस्तानी द्वारा एटामिक प्लान्टों से बिजली प्राप्ति की बात मान सकते थे।दुनिया जानती है कि 50 के दशक में हमारे यहॉ बडे विशाल पैमाने पर उद्योग आते गये, इसलिए एटमी श्रोत्र द्वारा बिजली प्राप्ति की जरूरत को इन्कार नही किया जा सकता। उधर पाकिस्तान में उद्योग का तो नामो निशान नही था। लेकिन पाकिस्तानकियह जिद्द थी कि वह एटमी रेस मे दौडेगा राष्ट्रीय गौरव की नई बुलन्दियों पर दर्शाने वाले परमाणु परीक्षणों के बाद पाकिस्तानजिस परमाणु क्षमता का दम भरता रहा उनका एक ही जवाब मिल रहा है कि चगाई में पाकिस्तान ने जो परमाणु परीक्षण किये हैं, यह उनकी सजा है।हर मामले में पाकिस्तानका हिन्दुस्तान की नकलउसकी पुरानी आदत है।औरआज जिस आर्थिक संकट में पाकिस्तान फंस गया है वह उसकी इस आदत का नतीजा है।

Reference

[1] पाकिस्तानी इस्लामिक बम : मेजर जनरल डी0 के पलित, पृष्ठ सं0 15-18

[2]ब्लिटज, जनवरी 14, 1981

[3]दिनमान, 15–20 मई, 1979

[4]स्ट्रेटजिक एनाल्सिस, अप्रैल 1980 पृष्ठ सं0 32.

[5]राष्ट्रीय सहारा, मई 1998.

[6]आर0आर0 सुब्रहम्ण्यिमः इण्डिया, पाकिस्तान, चाइनाः डिफेन्स एण्ड न्यूक्लर अंगिल इन साउथ एशिया, पृ0 141

[7]वाशिंगटन टाइमस् जुलाई 12, 1984 डॉ0ए0क्यू0 खान पाकिस्तानी बाम्ब बाइ श्रीधर, पृ0 173

[8]स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, मई 1987

[9]श्रीधरः डॉ0ए0क्यू0खान आन पाकिस्तान बाम्ब पृ0 152

[10]टाइम्स 30 मार्च 1987 साइटेड इन डॉ0 ए0क्यू0खान आन पाकिस्तानी बाम्ब एडिटेड बाईं श्रीधर, पू0 176

[11]स्ट्रैटेजिक ऐनालिसिस, फरवरी 1991

[12]जनरल, मिर्जा असलम बेग, न्यूक्लियर प्रोग्राम एण्ड पालिसिस रैम्बलिंग्स, डिफेन्स, जनरल वालूम 19 सं0 11–12, 1993 पृ0 20

[13]मशोहिद हुसैन, ''बाल नाऊ इन पाकिस्तान कोर्ट'', दी नेशन नवम्बर 29, 1990

[14] स्टाकहोम इण्टरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट 1992 पृ0 165

[15] इण्डिया टुडे, 1–5 सितम्बर, 1994

[16]नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1995

[17]द टाइम्स आफ इण्डिया, मई 1998

[18]Munir Ahmad Khan, "Salam Passes into History", *The News* (Islamabad), 24 November,(1996).

[19]Shahid-ur-Rahman Khan, *Long Road to Chaghi* (Islamabad: Print Wise Publications,(1999)

[20]Ashok Kapur, "1953–59: The Origins and Early History of Pakistani Nuclear Activities," Pakistan's Nuclear 7-7-7 Development, (New York: Croom Helm, 1987), pp. 38–39, 42

[21]एस0 सी0 श्रीवास्तव बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत–नेपाल सम्बन्धः एक समीक्षा ,RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary, Volume-04, Issue-08, August-(2019)

[22] एस0 सी0 श्रीवास्तव पाकिस्तान की परमाणु नीति, लक्ष्य एवं आवस्यकता भारत के परिपेछय में : एक समीक्षा RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary Volume-04, Issue-11, November-(2019)